RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भावी अध्यापकों में जीवन कौशल का अध्ययन

[1]Anju Soni & [2]Prof. M.P. Sharma

[1]*Research Scholar, Department of Education, Pecific University Udaipur (India)*
[2]*Retired Principal, Vidya Bhawan G.S. Teacher Training College, Udaipur (India)*

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 May 2019

Keywords
आधुनिकरण, शहरीकरण, भूमण्लीकरण.

ABSTRACT

आधुनिकरण, शहरीकरण, भूमण्लीकरण एवं जन संचार माध्यमों की अधिकता ने युवाओं की आकांक्षा, जीवन मूल्यों व दृष्टिकोणों को बदल दिया है जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान शिक्षा अध्यात्मवाद से हटकर भौतिकवाद के गर्त में प्रविष्ठ हो गई जिससे वर्तमान पीढ़ी शारीरिक, मानसिक, भावात्मक पक्षों के साथ–साथ नैतिकता व मूल्यहीनता की समस्याओं से अत्यधिक ग्रसित हैं अतः इनके उपचार व समाधान के लिए जीवन कौशल शिक्षा का प्रासंगिक होना अत्यन्त आवश्यक परिलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में निर्माणकर्त्ता के रूप में भावी अध्यापक ही सशक्त माध्यम होता हैं जिसके द्वारा समाज में परिवर्तन लाया जाता है प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत भावी अध्यापकों में जीवन कौशलों की स्थिति का अध्ययन करना हैं साथ ही साथ भावी अध्यापकों में जीवन कौशलों के तीनों आयामों की स्थिति की तरफ ध्यान केन्द्रित करने का एक प्रयास है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भावी अध्यापकों में जीवन कौशल शिक्षा के विकास के लिए सुझाव भी दिये गये हैं। यह शोध पत्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षण को सफल बनाने हेतु एक सार्थक प्रयास हैं।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के इस युग में जहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति ने दुनिया को अचंभित करने वाली उपलब्धियों को प्रदान करने के साथ–साथ मानव को प्रकृति विजेता के शिखर पर स्थापित कर दिया है, वहीं भौतिकवादी पहलुओं को प्राथमिकता प्रदान करती आधुनिक शिक्षा पद्धति ने नयी पीढ़ी को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक पक्षों के साथ–साथ मूल्यहीनता और नैतिकता की समस्याओं से ग्रसित कर दिया हैं। इस सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि ''जैसी होगी शिक्षा वैसा बनेगा भविष्य'' इसलिए बदलते परिवेश में अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं जीवन कौशलों का स्तर गिरता जा रहा हैं जिससे समाज के समक्ष जो तस्वीर उभर कर सामने आती हैं उसमें विरोधाभास, आतंकवाद, आक्रोश, तनाव, संकीर्णता, यौन उत्पीड़न, असुरक्षा की भावना चतुर्दिक हिंसा, भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों का तांडव नृत्व देखकर भयभीत होना स्वाभाविक हैं। यह स्थिति समाज के समक्ष एक अभिश्राप के रूप में अवतरित हो रही हैं वर्तमान समय में समाज को इस अभिश्राप से मुक्त कराने के लिए जीवन कौशल शिक्षा प्रकाश स्तम्भ के रूप में कार्य करती हैं जिससे सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण होता है। इसके सम्बन्ध में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1993 में जीवन कौशल को परिभाषित करते हुए कहा कि ''अनुकूल एवं सकारात्मक व्यवहार की वह क्षमताएँ जो किसी व्यक्ति को उसकी प्रतिदिन की आवश्यकताओं व चुनौतियों से प्रभावशाली ढंग से सामना करने के योग्य बनाती हैं'' विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ऐसे मूल कौशल दस है जिनकी पहचान की गई जिन्हें तीन आयामों में वर्गीकृत किया गया है, ये इस प्रकार हैः–

यूनिसेफ के द्वारा बताये गये ऐसे मूल कौशल दस है जो निम्न है।

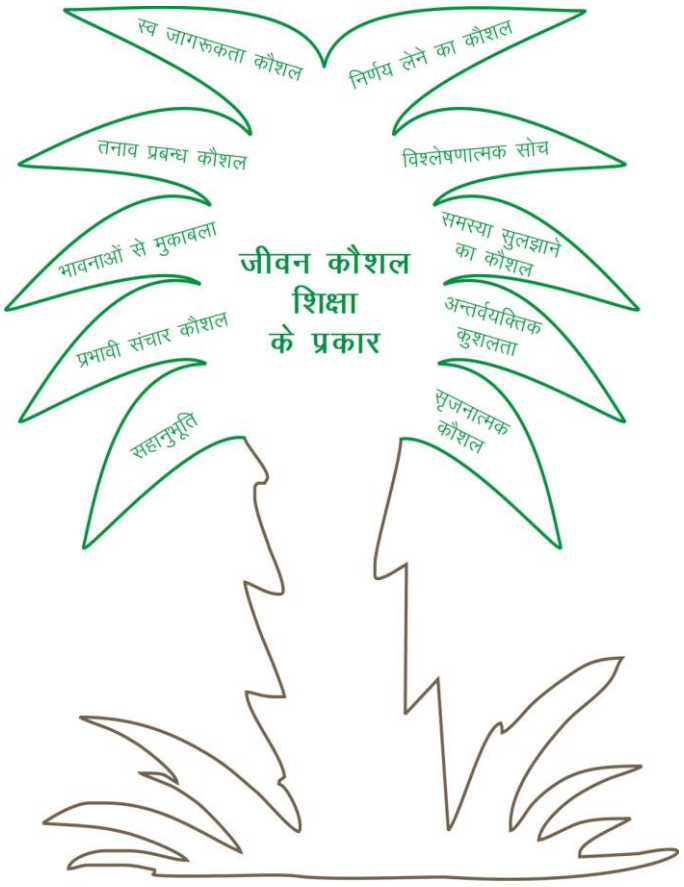

(डब्ल्यू.एच.ओ.)विश्व स्वास्थ्य संगठन ने उपरोक्त जीवन कौशलों को तीन आयामों में विभाजित कर दिया।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

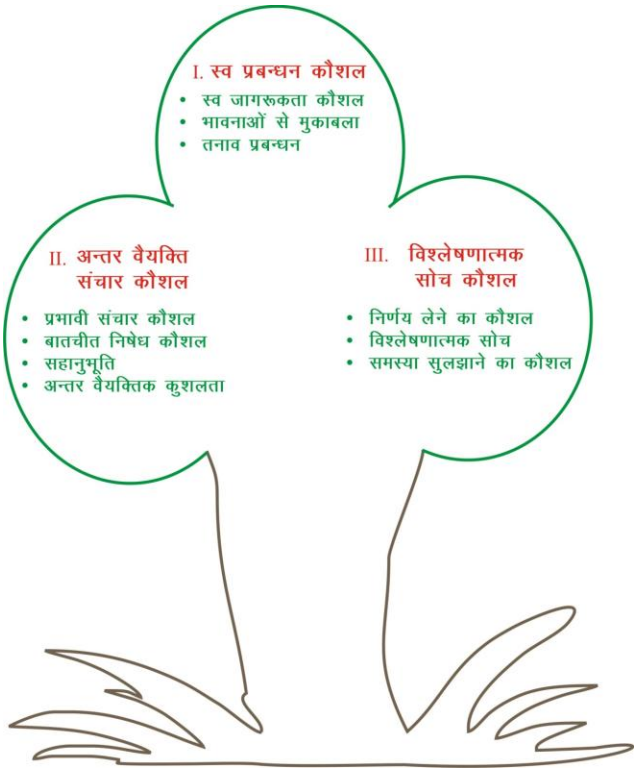

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवन कौशल शिक्षा का प्रासंगिक होना अत्यन्त आवश्यक परिलक्षित होता है क्योंकि जीवन कौशल शिक्षा से अर्जित ज्ञान आत्मवलोकन, चिन्तन एवं रचनात्मकता के माध्यम से जीवन में जुड़े तनावों, भावनाओं व संवेदनाओं के साथ समन्वय एवं सन्तुलन पैदा करने की क्षमता प्रदान करता हैं इस प्रकार जीवन कौशल शिक्षा विद्यार्थी एवं अध्यापकों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ हैं और जीवन कौशल पूर्ण शिक्षा से व्यक्ति जीवन के श्रेष्ठतम स्तर एवं गुणात्मकता को सुनिश्चित कर सकता है।

जीवन कौशलों के विकास की इस प्रक्रिया में निर्माणकर्त्ता या रचनाकार के रूप में एक अध्यापक ही सशक्त माध्यम होता है, जो विद्यार्थियों के जीवन में ज्योति की अलख जगाता है और जिसके द्वारा समाज में परिवर्तन लाया जाता हैं अतः यहां पर यह विचार करना आवश्यक है विद्यार्थियों के जीवन कौशलों को विकसित करने हेतु सबसे निकटतम एवं केन्द्र बिन्दु भावी अध्यापक होता है जो अपने प्रयासों से किसी भी कार्य को सफल बनाता है वह समाज का नवसृजनकर्त्ता के रूप में होता है जिसे शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशिक्षण दिया जाता हैं अतः बदलते सामाजिक परिवेश में सबसे पहले भावी अध्यापकों हेतु आयोजित शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुणात्मक पूर्ण सुधार की आवश्यकता अनुभव की गई हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उभरते नये आयामों और जीवन कौशलों की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए एक भावी अध्यापक में जो कौशल एवं योग्यताएँ होनी चाहिए उसका प्रभाव आने वाली नयी पीढ़ी में हस्तान्तरित होता हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1983) शिक्षकों की शिक्षा के लिये अनुशंसा की थी कि किसी भी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में एक अच्छा शिक्षक बनने के भावी अध्यापकों में आधारभूत कौशलों की क्षमताओं को अर्जित करने की योग्यताएं होनी चाहिए।

इसी प्रकार यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993), ''शिक्षा बिना बोझ के'' में कहा गया हैं, कि इन कार्यक्रमों में जोर इस पर हो कि भावी अध्यापकों में स्व अधिगम और स्वतन्त्र चिन्तन का विकास हो सके। नयी पीढ़ी को संस्कारित करने एवं सम्पूर्ण जीवन निर्माण की प्रक्रिया में भावी अध्यापक ही मुख्य भूमिका अदा करता हैं इसलिए प्रस्तुत शोध हेतु भावी अध्यापकों का चयन किया गया।

जीवन कौशल शिक्षा से विद्यार्थी को समाजोपयोगी, राष्ट्रोपयोगी एवं सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी के जीवन को गढ़ने में, उत्प्रेरक एवं मार्गदर्शन की भूमिका निभाने हेतु भावी अध्यापकों को स्वयं के प्रशिक्षण में जीवन कौशल शिक्षा के समावेश की महत्वपूर्ण आवश्यकता है जिससे वे भावी पीढ़ी के जीवन में सुख, शान्ति व समृद्धि का सृजन कर सकें तथा एवं खुशहाल राष्ट्र निर्माण हेतु योगदान दे सके।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के लिये जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया गया हैं वे इस प्रकार हैः–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों का अध्ययन करना।
2. भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के जीवन कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शैक्षिक योग्यता (स्नातक एवं अधिस्नातक) के आधार पर भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों का अध्ययन करना।
4. वैवाहिक स्थिति (विवाहित एवं अविवाहित) के आधार पर भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. विभिन्न जाति, वर्ग के आधार पर भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों का अध्ययन करना।
6. भावी अध्यापकों के लिये जीवन कौशलों से सम्बन्धित कार्यक्रम के सुझाव देना।

शोध का प्रारूप एवं प्रक्रिया

शोध की विधि

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शोध की प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत शोध समस्या के लिए यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया जिसके अन्तर्गत प्रस्तुत शोध हेतु उदयपुर संभाग के 4 जिलों (उदयपुर, चित्तौड, राजसमन्द,

डूंगरपुर) का चयन किया गया।प्रत्येक जिले में से 5 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।शोध अध्ययन हेतु चुने गये प्रत्येक महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रथम सत्र के 30 भावी अध्यापकों का चयन समूह न्यादर्श विधी द्वारा किया गया। इस तरह सभी महाविद्यालयों में से कुल 600 भावी अध्यापको का चयन किया गया।

शोध का परिसीमन

यह शोध बी.एड., प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए स्वनिर्मित जीवन कौशल प्रमापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में विश्लेषण करने तथा निष्कर्ष निकालने हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण, F परीक्षण, (चरिता विश्लेषण) पीयरसन सह–सम्बन्धन गुणांक आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

1. प्रस्तुत शोध के परिणाम के अनुसार न्यादर्श में सम्मिलित उदयपुर, राजसमन्द, चित्तौड़ और डूंगरपुर जिलों में बी.एड. का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे भावी अध्यापकों में चयनित तीनों ही जीवन कौशलों स्वप्रबन्धन कौशल, अन्तःव्यैक्तिक संचार कौशल और विश्लेषणात्मक सोच कौशल के आयामों का योग औसत श्रेणी में पाया गया। तीनों कौशलों के अलग–अलग विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि स्वप्रबन्धन कौशल एवं अन्त व्यैक्तिक संचार की स्थिति अधिकता की श्रेणी में पायी गयी किन्तु विश्लेषणात्मक सोच कौशल की स्थिति औसत श्रेणी में पायी गयी।
2. भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की तुलना करने में पाया गया कि चयनित तीनों ही जीवन कोशलों के आयामों में योग के आधार पर जीवन कौशलों का स्तर अध्यापिकाओं की अपेक्षा अध्यापकों में अधिक पाया गया। तीनों कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण में पाया गया कि स्वप्रबन्धन कौशल एवं विश्लेषणात्मक सोच कौशल का स्तर अध्यापिकाओं की अपेक्षा अध्यापकों में अधिक पाया जबकि अन्तःव्यैक्तिक संचार कौशल में अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. भावी अध्यापकों में शैक्षिक योग्यता (स्नातक एवं अधिस्नातक) के आधार पर जीवन कौशलों की स्थिति से सम्बन्धित निष्कर्ष में पाया गया कि अधिस्नातक स्तर की योग्यता वाले अध्यापकों का स्तर तीनों ही जीवन कौशलों के आयामों के योग में एवं तीनों कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण में सार्थक रूप से अधिक पाया गया।
4. वैवाहिक स्थिति (विवाहित एवं अविवाहित) के आधार पर भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों की स्थिति से सम्बन्धित निष्कर्ष के अनुसार चयनित तीनों ही जीवन कौशलों के आयामों के योग में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। तीनों कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण में पाया गया कि स्वप्रबन्धन कौशल एवं अन्तःव्यैक्तिक संचार कौशल में काई सार्थक अन्तर नहीं था किन्तु विश्लेषणात्मक सोच कौशल की स्थिति में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. जाति वर्ग के आधार पर भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों की स्थिति से सम्बन्धित निष्कर्ष में पाया गया कि चयनित तीनों जीवन कौशलों के आयामों के योग में सार्थक अन्तर पाया गया। तीनों आयामों के पृथक–पृथक विश्लेषण के अनुसार स्वप्रबन्धन कौशल में कोई अन्तर नहीं पाया गया किन्तु अन्तःव्यैक्तिक संचार कौशल एंव विश्लेषणात्मक सोच कौशल में सार्थक रूप से अन्तर पाया गया।

6 विभिन्न जाति वर्गों की परस्पर तुलना के निष्कर्ष में पाया गया कि सामान्य वर्ग पिछड़ा वर्ग के भावी अध्यापकों के तीनों ही जीवन कौशलों के योग एवं तीनों कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेण के निष्कर्ष में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

7 इसी प्रकार सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के भावी अध्यापकों के तीनों ही जीवन कौशलों के योग व तीनों कोशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

8 पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों की तुलना में भी पाया गया कि तीनों जीवन कौशलों के आयामों के योग एवं तीनों कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

9 किन्तु पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जनजाति के भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों की तुलना में चयनित तीनों कौशलों के योग में सार्थक रूप से अन्तर पाया गया। तीनों कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण के निष्कर्ष में पाया गया कि स्वप्रबन्धन कौशल में कोई सार्थक अन्तर नहीं है किन्तु अन्तःव्यैक्तिक संचार कौशल व विश्लेषणात्मक सोच कौशल में सार्थक अन्तर पाया गया।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी अध्यापकों की तुलना में पाया गया कि चयनित तीनों कौशलों के योग में सार्थक रूप से अन्तर हैं। तीनों

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण के निष्कर्ष में पाया गया कि स्वप्रबन्धन कौशल में कोई सार्थक अन्तर नहीं है किन्तु अन्तः व्यैक्तिक संचार कौशल व विश्लेषणात्मक सोच कौशल में सार्थक अन्तर पाया गया।

10 सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जनजाति के भावी अध्यापकों की तुलना करने में पाया गया कि चयनित तीनों ही जीवन कौशलों के योग में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तीनों कौशलों के पृथक–पृथक विश्लेषण के निष्कर्ष में स्वप्रबन्धन कोशल एवं विश्लेषणात्मक सोच कौशल में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया किन्तु अन्तःव्यैक्तिक संचार कौशल में अन्तर पाया गया।

शोध से सम्बन्धित सुझाव

प्रस्तुत शाोध के निष्कर्ष में भावी अध्यापकों में कुल योग के आाधार पर जीवन कौशलों की स्थिति औसत पाई गई है जिससे यह स्पष्ट होता है कि भावी अध्यापकों में जीवन कौशल शिक्षा की दक्षता को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिये विभिन्न सुझाव उपयोग होंगे–

1 जीवन कौशल सम्बन्धित विषय सामग्री को बी.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम की पाठ्यचर्या की रुप रेखा में सम्मिलित किया जाये जिससे वैश्वीकरण के बदलते हुए परिवेश में जीवन कौशलों की शिक्षा के लिए भावी अध्यापक तैयार हो सके तथा विद्यालयों में शिक्षक बनने पर सशक्त भावी पीढ़ी के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

2 इसी सन्दर्भ में जीवन कौशल शिक्षा विषयक पाठयचर्या के निर्माण हेतु महत्वपूर्ण संस्थाएँ जैसे NCERT, SIERT और विश्वविद्यालयों द्वारा विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में जीवन कौशल शिक्षा विषयक कार्यक्रम की रूपरेख तैयार करने हेतु प्रयास किये जावें।

3 जीवन कौशल पाठ्यचर्या निर्माण के अर्न्तगत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर परW.H.O.और यूनेसको के द्वारा उपलब्ध करायी गई विषय सामग्री तथा विभिन्न शोध कार्यो के परिणामों को ध्यान में रखते हुए पाठयचर्या निर्माण प्रक्रिया सम्पादित कि जाये। जिससे इस कार्यक्रम की गुणवता एंव व्यवहारिकता को सुनिश्चित किया जा सके।प्रशिक्षण के पश्चात् भविष्य में विद्यालयों में जाकर वे इनका प्रयोग करते हुए अपने विद्यार्थियों में विभिन्न जीवन कौशलों की समझ एंव दक्षताओं का विकास कर सकने में सक्षम बन सकेंगे।

5. जीवन कौशलों की शिक्षा के लिये शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन भी उपयोगी हो सकेगा जैसे एड्स सम्बन्धी जानकारी, समाज में फैली हमारी कुप्रथाएँ, असमाजिक परम्पराएं एंव कई संवेदनशील मुद्वों को नाटक, वादविवाद प्रतियोगिता एंव रेलियों में भाग लेने के अवसर देकर विभिन्न कौशलों के प्रति दक्षता एंव समझ विकसित करने के अवसर उपयोगी होंगे।

6. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत आयोजित किये जाने वाली पाठ्यसहगामी गतिविधियों में वन शाला शिविर, SUPW इंटरनशिप कार्यक्रम के द्वारा भी विभिन्न जीवन कौशलों कों विकसित करने के अवसर प्रदान किये जा सकते है। इस हेतु स्पष्ट कार्य योजना के अन्तर्गत काम करना लाभकारी होगा।

7 छात्र अध्यापकों में प्रशिक्षण के दौरान जिवन कौशल शिक्षा की शिक्षण विद्याओं और व्यूह रचना जैसे मस्तिष्क उद्ववेलन, दलशिक्षण, समस्या समाधान, अन्तःविश्लेष्ण प्रक्रिया, सामुहिक वाद विवाद, सम्मेलन प्रविधि, कार्यशालाप्रविधि, विचार गोष्ठी एंव सामूहिक अधिगम विद्या आदि में अभ्यास करने पर्याप्त अवसर प्रदान की जाने चाहिए।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रक्रिया के द्वारा भावी अध्यापकों के जीवन कौशलों की स्थिति के विषय में जों भी निष्कर्ष एंव सुझाव प्रस्तुत किए गए है वे सभी शिक्षाविदों, नीति निर्धारकों एंव शोधार्थियों के लिये लाभकारी सिद्व हो सकेगे और यदि किसी भी रुप में ये निष्कर्ष एंव सुझाव जीवन कौशल शिक्षा को सुदृढ़ बनाने तथा गुणात्मक, व्यावहारिक एंव सुव्यवस्थित करने में सहायक हो सकेगे तो प्रस्तुत शोध का यह विनम्र प्रयास सार्थक हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एन.सी.ई.आर.टी. जीवन के लिए शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., एनसीओ, यूनिस्को।
2. एन.सी.ई.आर.टी., 2006, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
3. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (2012), 'जीवन कौशल शिक्षा' राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर।
4. त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (1993), रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
5. ढौडियाल एवं फाटक, 2003 शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. सिन्हा पवन (2015) 'शिक्षा के मायने' भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 36, अंक 2

Webliography

1. http://en.wikipedia.org
2. http://www.lifeskillhandbook.com